प्रेस विज्ञप्ति दिनांक 18- 08- 2008

स्व नकुल देव ढीढी जी के 33वीं पुण्य तिथि पर

" चाहत व ताकत के लिये जयंती की जरूरत - कब और कैसे " विषय पर

सामाजिक परिचर्चा संपन्न

विगत 16 अगस्त 2008 को संध्या 6 00 बजे सतनाम भवन सेक्टर 6 में स्व नकुल देव ढीढी जी के 33वीं पुण्य तिथि पर " चाहत व ताकत के लिये जयंती की जरूरत - कब और कैसे " विषय पर सामाजिक परिचर्चा संपन्न हुआ । अध्यक्षता श्री टी दास एवं संचालन श्री एफ आर जनार्दन ने किया । उक्त अवसर पर विभिन्न वक्ताओं ने सामाजिक परिचर्चा में भाग लिये । उन्होंने बताया कि प्रत्येक व्यक्ति अथवा समूह का अपने विचार धारा के अनुरूप कुछ न कुछ लक्ष्य होता ही है । इतना जरूर है कि लक्ष्य नकारात्मक अथवा सकारात्मक हो सकता है । नकारात्मक लक्ष्य में स्वार्थ परिता . नफरत. आपसी ऊंच नींच की बू आती है . जबकि सकारात्मक लक्ष्य में आपसी प्रेम व भाईचारा . विश्व कल्याण . मानवता आदि की सुगंध निहित होती है । अनादि काल से इन्हीं दो विचार धाराओं में एक दूसरे पर हावी होने की होड चली आ रही है ।इसका भुगतान हमारे देश भारत वर्ष को परतंत्रता की बेडी में जकड कर करना पडा है ।

लक्ष्य प्राप्ति के लिये चाहत के साथ साथ ताकत का होना आवश्यक है । सकारात्मक अथवा मानवता वादी लक्ष्य के प्राप्ति के लिये मानवता वादी महापुरूषों के मानवता वादी विचार धारा को आम जनता तक पहुंचाना जरूरी है । पूरे भारत वर्ष पर दृष्टि पात करें तो अनेक मानवता वादी महापुरूषों की छवि उभर कर आती है । इसी कडी में छत्तीस गढ की भूमि को देखें तो मानवता के पुजारी गुरू घासी दास जी को कोई इंकार नहीं कर सकता . जिनका विचार धारा जन जन तक पहुंचाना आवश्यक है । धन्य हैं स्व नकुल देव ढीढी जी जिनका जन्म 12अप्रेल 1914 को ग्राम भोरिंग (महासमुंद) में हुआ . 1930 में जंगल आन्दोलन में भाग लिये .18 दिसम्बर 1938 को गुरू घासीदास जी की जयंती का शुरूआत अपने ग्राम भोरिंग से किये ।इतना ही नहीं तीन दिवसीय गिरौदपुरी - मेला शुरूआत करने का श्रेय भी उन्हीं को जाता है । गुरू घासीदास जयंती के माध्यम से बाबा जी के मानवता वादी विचार धारा को जन जन तक पहुंचाने का काम आजीवन अंतिम समय 16 अगस्त 1975 तक करते रहे ।उन्होंने जयंती के जरूरत को अच्छी तरह समझा .जिसका आज चाहत व ताकत के रूप में सर्वसाधारण ही नहीं अपितु शासन प्रशासन को भी महसूस है ।यह संयोग ही है कि इस कार्यकम में भिलाई के ही नहीं बल्कि ग्राम भोरिंग व उसके आसपास गांव से काफी तादाद में लोग उपस्थित थे . जिन्होंने नकुल जी के तैल्य चित्र पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजली प्रदान किये । सर्व श्री टी दास . श्री पंच राम बंजारे . श्री जी एल टंडन . श्री मती सुशीला टंडन . श्री गोविंद बर्मन . श्री कुमार भारद्वाज . श्री सुरसेन कुर्रे . श्री आर के बंजारे . श्री मंशा राम कुर्रे . श्री बी एल कुर्रे श्री एफ आर जनार्दन आदि ने परिचर्चा में अपने विचार व्यक्त किये । कु शालिनी टंडन ने अपने कविता से सबका मन मोंह लिया ।

(एफ आर जनार्दन)
संयोजक
गुरू वंदना परिवार
भिलाई दुर्ग

ब्यूरो चिफ
लोक प्रिय हिन्दी / अंग्रेजी दैनिक